Pankat. 15, 16. 45, 2. 81, 5. — μ) mit $\overline{\uparrow}$ verstärktes Fragewort Med. avj. 43. किं नु स्वप्नो गया दृष्टः N.12,73. मकाबला किं न्विक दुर्वलेव सीवी-रराजस्य मताक्मिस्म Daaup. 5, 13. 2,2. िकं न् ते उद्वपयद्राजा रामी वा - येपार्मत्यविवासश्च बत्कते त्लयमागती R.2,74,3. कि न् स्याद्धिमवा-न्भिन्नः किं नु स्विद्दीर्यते मुक्ती MBn. 2,933. किं नु स्यान्मातिलारयम् N. 19,25. किं न में मरणं श्रेयः परित्यांगा जनस्य वा 10,10. किं न गर्काम्य-घातमानमव भीष्नं दुरासदम्। स्रव वा पितरम् MBn. in Bang. Chr. 8,28. र्षः सुप्ता किं नु मृता नु किं मनिस में लीना विलीना न् किम् V≅र. 11,15. - wie viel mehr oder weniger: एतान क्त्मिन्क्रामि - श्रपि त्रैलोक्यरा-ज्यस्य देतोः किं न् महीकृते BHAG. 1,35. — किं न् खल् woher doch: किं न् खल् गीतार्थमाकार्पोष्टवनविर्हादते अपि वलवडुतकारिठता अस्मि Çim. 60,4. किं नु खल् वाले ऽस्मिनीर्स इव पुत्रे सिन्धाति मे मन: 102, 6. verstärktes Fragewort: किं नु खलु में प्रियादर्शनादते शरूणमन्यत् habe ich wohl eine andere Zuflucht als den Anblick der Geliebten? Cik. 32, 12. किं न् खल् यया वयमस्यामेवानियमस्मान्प्रति स्यात् 17,13. — v) mit पुनर् wie viel mehr oder weniger: मां हि पार्घ ट्यपामित्व वे ऽपि स्य: पापयानयः । स्त्रियो वैश्यास्तवा प्रद्रास्ते अपि यात्ति परंग गतिम् ॥ किं पुन-त्रीव्हाणाः प्रायाः भक्ता राजर्षयस्त्या । Buag. १,३३. देवदानवगन्धर्वा यत्ताः पतगपन्नगाः। न शक्ता रावणं सेाठ्ं किं पुनर्मानवा पृधि॥ R. 1,22,21. 2, 23, 22. 3, 3, 4. 14, 21. 4, 7, 3. 28, 22. 53, 24. And. 5, 2. Varan. Brh. S. in Z. f. d. K. d. M. 4,317. Pankat. 45, 5. I,452. Megh. 3.17. - \$) mit व्या: िकं वा शक्तलेत्यस्य मात्राख्या ob wohl Çak. der Name seiner Mutter ist? Çik. 103,7. किं वानविष्यर्गुणस्तमसा विभेता तं चेत्सकुन्निक्षो धुरि नाकारिष्यत् würde wohl Ar. der Zerstreuer sein, wenn nicht u.s. w. 163. — oder in und ausserhalb der Frage: राजप्ति सप्ता किं वा जाग-िर्घ Paskar. 44,21. Çañolasr. 7. तित्ये दिवापि शस्त्रेण मार्यामि विं वा विषं प्रयच्कामि विं वा प्रमुधर्मेण व्यापादयामि Раккат. 34, 15. 16. सा ऽवं म्वान्यमात्ययोरेकतमस्य िकं वा ह्योर्घि विनिपातः संपद्यते लग्नम् 92,5. - o) mit स्विद् warum wohl: जिं स्विदत्र निषिद्धं मे तथा पृष्ठे अधिरोक्-णम् Kathas. 26, 75. — verstärktes Fragewort: कि स्वित्पुत्रेभ्यं: पितरा उपावतः १९४.1,161,10. किमिर्ग स्विद्केम् 164,6. कि स्विद्ग्रिनिभा भा-ति किं स्वित्सीम्यदर्शनः MBu. 1, 1327. किं स्विद्वालविन्ष्टेन कृतं किंचि-द्रवेतु Katuis. 14,48.

किमर्य (किन् + श्रर्य) adj. welchen Endzweck habend: किमर्था उपं त-वारम्भ: MBB. in BESF. Chr. 57,24.

निर्मियम् (wie eben) adv. zu welchem Endzweck, weshalb, warum Çat. Ba. 14, 6, 10, 1. MBH. 4, 906. Hip. 4, 28. N. 9, 31. 32. 11, 22. 22, 7. Benf. Chr. 3, 1. 46, 30. Viçv. 3, 14. R. 1, 8, 2. 18, 10. 48, 4. 3, 53, 25. 5, 31, 3. Pat. zu P. 1, 1, 62. Çâk. 105, 18. Hit. 18, 22. Vid. 183.

किमाष्य (किम् + म्राप्या) adj. welchen Namen habend Ç. k. 104, 18. किमिन्क् (किम् + इन्का) adj. was man begehrt, wünscht: एते (ब्राह्म-णाः) भागेरलंकारेर्न्येश्चेन किमिन्क् तेः। सद्दा पूच्या नमस्कारे रह्याश्च पिन्त्वन्य॥ MBB. 13, 2111. प्रतिम्रयान्सभाः कूयान्प्रयाः पुष्कारिणीस्तवा। नैत्यकानि च सर्वाणि किमिन्क् कमतीव च॥ 6685.

किमी दिन् m. े दिनी f. Bez. einer Klasse von Unholden Nin. 6, 11. दे-षो धत्तमनवायं किमी दिने R.V. 7,104,2. सं वर्षेण सृत्रत् पः किमीदी AV. 4,28.7. वि लेपतु पातुधाना स्त्रिणो ये किमीदिने: 1,7,3. 28,12. 2,24,1. 4.20.5.8. 8,3,25. 6,21.25. 12,1,50. fem. 2,24,5. — Vgl. शिमिद. किमीय (von किम्) adj. f. म्रा zu wem gehörig, wohin gehörig: किमी-या जात्यास्य माता Dagak. 193, 10.

किंपच (जिन् + पच kochend) adj. geizig Rijam. zu A.K. 3,1,48. ÇKDa. - Vgl. जिंपचान und मिलंपच.

किंपचान किम् + पचान von पच्) adj. dass. AK. 3, 1, 48. H. 368. किंपहाक्रम (किम् + प°) adj. von welchem Muth beseelt MBu. 1, 1327. R. 3, 38, 2.

नियाक (किम् + पाक) 1) adj. unreif, unwissend, dumm H. an. 3,24. Med. k. 67. — 2) m. eine Gurkenart (महाकाल) H. 1141. H. an. RATNAM. im ÇKDn. die Frucht davon Med. न लुट्यो बुध्यते द्वापान्किपाकानिव भन्नपन R. 2,66,6.

जिप्ना (जिन् + प्ना) f. N. pr. eines Flusses MBH. 2,373. 3,12910. किंपुरुप (किम् + पु) und किंपुरुष ; auch किंपुरुष (ÇAT. BR. 1,2,3, 9) 1) m. ein best. Zwittergeschöpf, nach den BRAIMANA ein schlechteres Seitenstück zum Menschen (); wornach nicht unwahrscheinlich wäre, dass man damit eine best. Affenart bezeichnet hätte. Çar. Br. 7, 5,2,32. 1,2,3,9. Air. Br. 2,8. ein best. verachteter Menschenschlag scheint gemeint zu sein VS. 30, 16. In der Folge führen andere Wesen, in welchen Menschen- und Thierleib verbunden ist, diese Benennung. Man versetzt sie nach dem Hemakuta, identificirt sie mit den Kimnara und lässt sie wie diese im Gefolge von Kuvera erscheinen. AK. 1,1,1,66. H. 194. an. 4,317. Med. sh. 51. पुलक्स सुता राजञ्क्लभाश्च प्रकारितताः । सिंहाः किंप्रूषा (verschieden von किंत्र, welche vorher erwähnt werden) ट्यात्रा यता ईकाम्गास्तवा ॥ MBn. 1,2572. देशं चिंत्य-रुपावासं हुमपुत्रेण रिततम् 2, 1038. हुमः किंपुरुपेशञ्च उपास्ते धनदे-श्चरम् ४१०. कश्नीरराजा गानर्दः कद्वपाधिपतिस्तवा । द्रमः किंपुरुषश्चीव पर्वतीयो द्यानामयः Hariv. 5014 = 5495, wo aber पार्वतीयाश्च मालवाः. ष्ट्रष खल् केमक्रो नाम किंप्रूषपर्वतस्तपसा सिद्धितेत्रम् Çak.99,17. धन्दश्च धनाध्यतो यतः किंपुरुषाधिपः (lies: यत्तिकं°) HARIV. 12626. किंपुरुपे-म्रा ein Bein. Kuvera's H. 190. किंपुरुषाङ्गनानाम् Kumanas. 1, 14. स-क्लाशा गन्धवित्रंपूरुपिकंनरा जगः Buic. P. 8, 20, 20. Bei den Gaina werden die Kimpurusha wie die Kimnara zu den Vjantara gezählt H. 91. Nach VP. 162 ist Kimpurusha einer der 9 Söhne Agnidhra's, welchem der Varsha Kimpurusha als Erbtheil anheimfällt. - 2) N. eines nach den Kimpurusha benannten Varsha oder Welttheils, m. H. an. Med. n. H. 947, Sch. निर्मेपूर्ण n. TRIK. 2,1,3. - VP. 163. 168. जिंयुक्तेषे वर्षे Bule. P. 5,19,1. किंयुक्तषादीनि वर्षाणि 1,16,13. ह-रिवर्षिकंपुरुषभारतानाम् 5,16,9. किंपुरुषवर्ष Kâd. in Z. d. d. m. G. 7,

किंप्रकार्म (किम् + प्रकार) adv. auf welche Weise Vop. 7, 110. किंप्रभाव (किम् + प्र°) adj. welche Macht besitzend Pankar. 258, 13. किंवल (किम् + वल) adj. welche Kraft —, welche Macht besitzend Buag. P. 7, 8, 7.

निमेरा f. ein best. Parfum (निजी) ÇABDAK. im ÇKDA. — Zerlegt sich lautlich in जिम् — भरा.

निम्त (निम् + भूत) adj. was seiend bei Scholiasten, z. B. bei Manton. zu VS., beim Schol. des Amar. und bei dem des Ragn. in der Calc. Ausg., wo dafür immer abgekürzt निंं steht. — Vgl. न्यंभृत.